



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

"कृषि आधारित हरियाणा में लैंगिक समानता की दिशा में महिला किसानों का योगदान : विकसित भारत 2047 के सन्दर्भ में "

रेणु कुमारी

शोधार्थी, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर, रोहतक

renudahiya383@gmail.com

डॉ. कपूर सिंह

शोध निर्देशक, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर, रोहतक

kapoorsinghdhaka@gmail.com

सार

विकसित भारत 2047 की अवधारणा भारत को सामाजिक, आर्थिक एवं संस्थागत रूप से एक समावेशी और सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित करने पर केंद्रित है, जिसमें लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को विकास की आधारशिला माना गया है। हरियाणा, जो भारत के प्रमुख कृषि प्रधान राज्यों में से एक है, वहाँ कृषि उत्पादन, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और खाद्य सुरक्षा में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

महिलाएँ बीज चयन, रोपाई, निराई-गुड़ाई, कटाई, भंडारण, पशुपालन और दुग्ध उत्पादन जैसी कृषि गतिविधियों में सक्रिय रूप से योगदान देती हैं, फिर भी सामाजिक-सांस्कृतिक रूढ़ियों, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, भूमि स्वामित्व के अभाव, तकनीकी संसाधनों तक सीमित पहुँच तथा निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में कम सहभागिता के कारण उन्हें लंबे समय तक किसान के रूप में औपचारिक पहचान नहीं मिल सकी। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हरियाणा की कृषि व्यवस्था में महिला किसानों की भूमिका का भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना तथा उनके समक्ष विद्यमान सामाजिक, आर्थिक और संस्थागत चुनौतियों को उजागर करना है।

शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा, स्वयं सहायता समूहों, सरकारी योजनाओं, कृषि प्रशिक्षण और तकनीकी नवाचारों के माध्यम से महिला किसानों की स्थिति में धीरे-धीरे सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि यदि महिला किसानों को भूमि अधिकार, वित्तीय सहायता, तकनीकी ज्ञान और सामाजिक सम्मान प्रदान किया जाए, तो वे न केवल कृषि की उत्पादकता और सतत विकास में योगदान दे सकती हैं, बल्कि विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों की प्राप्ति में भी एक निर्णायक और परिवर्तनकारी भूमिका निभा सकती हैं।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

मुख्य शब्द: विकसित भारत 2047, लैंगिक समानता, महिला किसान, हरियाणा, कृषि विकास, महिला सशक्तिकरण

परिचय

कृषि प्रधान हरियाणा की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना में महिलाओं की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है, किंतु लंबे समय तक उनके योगदान को औपचारिक मान्यता और लैंगिक समानता के दृष्टिकोण से पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाया। बदलते वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और सामाजिक जागरूकता के वर्तमान दौर में महिला किसान न केवल पारंपरिक कृषि कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं, बल्कि नवाचार, जैविक खेती, पशुपालन तथा ग्रामीण उद्यमिता के माध्यम से कृषि क्षेत्र को नई दिशा भी दे रही हैं।

विकसित भारत 2047 की परिकल्पना, जिसमें समावेशी विकास और सामाजिक न्याय प्रमुख आधार हैं, महिला किसानों की सशक्त भागीदारी के बिना पूर्ण नहीं हो सकती। हरियाणा में कृषि उत्पादन, श्रम विभाजन और संसाधनों तक पहुँच के संदर्भ में लैंगिक असमानता अब भी एक चुनौती बनी हुई है। भूमि स्वामित्व, वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण सुविधाओं और निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में महिलाओं की सीमित भागीदारी उनके आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण को प्रभावित करती है।

इसके बावजूद महिला किसान आत्मनिर्भरता, परिवार की आजीविका और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में केंद्रीय भूमिका निभा रही हैं। वर्तमान समय में सरकारी योजनाएँ, स्वयं सहायता समूह, डिजिटल कृषि और शिक्षा के बढ़ते अवसर महिलाओं को कृषि क्षेत्र में नई पहचान प्रदान कर रहे हैं। यह शोध पत्र कृषि आधारित हरियाणा में लैंगिक समानता की दिशा में महिला किसानों के योगदान का विश्लेषण करते हुए विकसित भारत 2047 के व्यापक संदर्भ में उनकी भूमिका को समझने का प्रयास करता है।

अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार महिला किसानों की सहभागिता, कौशल विकास और नीतिगत समर्थन कृषि उत्पादन के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन को भी गति दे सकते हैं। साथ ही, यह शोध लैंगिक समानता को बढ़ावा देने वाली रणनीतियों और चुनौतियों की पहचान करते हुए भविष्य के लिए एक समावेशी एवं टिकाऊ कृषि मॉडल की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

अध्ययन क्षेत्र

इस शोध का अध्ययन क्षेत्र हरियाणा राज्य है, जो उत्तर भारत का एक प्रमुख कृषि प्रधान प्रदेश माना जाता है। यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, नहर सिंचाई व्यवस्था और हरित क्रांति के प्रभाव ने कृषि को आर्थिक विकास का मुख्य आधार बनाया है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

करनाल, हिसार, जींद, भिवानी और सिरसा जैसे जिलों में गेहूँ, धान, कपास तथा सब्जी उत्पादन के साथ-साथ डेयरी और पशुपालन गतिविधियाँ भी व्यापक रूप से होती हैं।

इन क्षेत्रों में महिला किसानों की भागीदारी पारंपरिक कृषि कार्यों से लेकर आधुनिक तकनीकों को अपनाने तक दिखाई देती है।

अध्ययन क्षेत्र का चयन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हरियाणा में ग्रामीण सामाजिक संरचना, लैंगिक भूमिकाओं और संसाधनों तक पहुँच के संदर्भ में विविधता पाई जाती है, जो महिला किसानों की वास्तविक स्थिति को समझने में सहायक बनती है। इस शोध के मुख्य उद्देश्य कृषि आधारित हरियाणा में महिला किसानों के योगदान का समग्र विश्लेषण करना और लैंगिक समानता की दिशा में उनके प्रयासों को विकसित भारत 2047 के संदर्भ में समझना है।

अध्ययन यह जानने का प्रयास करता है कि कृषि कार्यों में महिलाओं की भूमिका केवल श्रम तक सीमित है या वे निर्णय-निर्माण, नवाचार और आर्थिक प्रबंधन में भी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। इसके साथ ही, शोध का उद्देश्य महिला किसानों को मिलने वाली सरकारी योजनाओं, प्रशिक्षण सुविधाओं और डिजिटल कृषि के अवसरों का मूल्यांकन करना भी है। एक अन्य महत्वपूर्ण लक्ष्य उन सामाजिक-आर्थिक बाधाओं की पहचान करना है, जो महिलाओं की प्रगति में रुकावट पैदा करती हैं, जैसे भूमि स्वामित्व की कमी, शिक्षा और संसाधनों तक सीमित पहुँच।

इस प्रकार, अध्ययन क्षेत्र और उद्देश्य मिलकर यह स्पष्ट करते हैं कि महिला किसानों का सशक्तिकरण न केवल कृषि विकास बल्कि सामाजिक समानता और सतत ग्रामीण परिवर्तन के लिए भी आवश्यक है। हरियाणा के चयनित कृषि क्षेत्रों में महिला किसानों की कृषि गतिविधियों, उत्पादन प्रक्रिया और निर्णय-निर्माण में भागीदारी का विशिष्ट एवं मापनीय विश्लेषण करना। कृषि क्षेत्र में लैंगिक समानता से जुड़े सामाजिक-आर्थिक कारकों — जैसे शिक्षा स्तर, आय, संसाधनों तक पहुँच, भूमि स्वामित्व और श्रम विभाजन का तुलनात्मक अध्ययन करना, ताकि वास्तविक स्थिति का आकलन किया जा सके।

विकसित भारत 2047 के लक्ष्य के अनुरूप महिला किसानों की क्षमता, नवाचार, डिजिटल कृषि अपनाने की प्रवृत्ति और उद्यमिता के अवसरों का समयबद्ध मूल्यांकन करना। महिला किसानों के सामने मौजूद प्रमुख चुनौतियों (सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी) की पहचान कर उनके समाधान हेतु व्यवहारिक, यथार्थवादी और नीति-आधारित सुझाव प्रस्तुत करना, जिससे समावेशी एवं सतत कृषि विकास को बढ़ावा मिले।



उद्देश्य

- 1 हरियाणा के चयनित कृषि क्षेत्रों में महिला किसानों की कृषि गतिविधियों, उत्पादन प्रक्रिया और निर्णय-निर्माण में भागीदारी का विशिष्ट एवं मापनीय विश्लेषण करना।
- 2 कृषि क्षेत्र में लैंगिक समानता से जुड़े सामाजिक-आर्थिक कारकों जैसे शिक्षा स्तर, आय, संसाधनों तक पहुँच, भूमि स्वामित्व और श्रम विभाजन का तुलनात्मक अध्ययन करना, ताकि वास्तविक स्थिति का आकलन किया जा सके।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

3 विकसित भारत 2047 के लक्ष्य के अनुरूप महिला किसानों की क्षमता, नवाचार, डिजिटल कृषि अपनाने की प्रवृत्ति और उद्यमिता के अवसरों का समयबद्ध मूल्यांकन करना।

4 महिला किसानों के सामने मौजूद प्रमुख चुनौतियों (सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी) की पहचान कर उनके समाधान हेतु व्यवहारिक, यथार्थवादी और नीति-आधारित सुझाव प्रस्तुत करना, जिससे समावेशी एवं सतत कृषि विकास को बढ़ावा मिले।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में कृषि आधारित हरियाणा में महिला किसानों की भूमिका तथा लैंगिक समानता से जुड़े पहलुओं का अध्ययन करने के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों (मभवदकंतल 'वनतबमे') का उपयोग किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों में विभिन्न शोध पत्र, जर्नल लेख, पुस्तकें, सरकारी नीतियाँ, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की रिपोर्ट, हरियाणा कृषि विभाग के सांख्यिकीय आँकड़े तथा महिला सशक्तिकरण से संबंधित प्रकाशित साहित्य शामिल हैं। इन स्रोतों के माध्यम से महिला किसानों की भागीदारी, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, कृषि उत्पादन में योगदान और सरकारी योजनाओं के प्रभाव का व्यापक आधार तैयार किया गया है। शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है। वर्णनात्मक पद्धति के अंतर्गत हरियाणा के कृषि परिदृश्य, महिला किसानों की पारंपरिक और आधुनिक भूमिकाओं तथा लैंगिक समानता की वर्तमान स्थिति का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया गया है। वहीं विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से उपलब्ध आँकड़ों और साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि महिला किसानों की वास्तविक चुनौतियाँ क्या हैं और विकसित भारत 2047 के लक्ष्य में उनकी भागीदारी किस प्रकार प्रभाव डाल सकती है।

अध्ययन की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी का समन्वय कर तथ्यों का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया गया है। साथ ही, सामाजिक-आर्थिक संकेतकों कृ जैसे शिक्षा स्तर, संसाधनों तक पहुँच, श्रम विभाजन और आय के अवसर कृ को आधार बनाकर महिला किसानों की स्थिति का आकलन किया गया है। इस प्रकार अपनाई गई शोध पद्धति न केवल अध्ययन को वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ बनाती है, बल्कि हरियाणा के कृषि क्षेत्र में लैंगिक समानता से जुड़े व्यापक निष्कर्षों तक पहुँचने में भी सहायक सिद्ध होती है।

हरियाणा में महिला किसानों की भूमिका

हरियाणा की कृषि व्यवस्था में महिला किसानों की भूमिका बहुआयामी और अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ केवल सहायक श्रमिक नहीं हैं, बल्कि खेती के लगभग प्रत्येक चरण में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। बीज बुवाई, निराई-गुड़ाई, फसल की कटाई, अनाज की सफाई और भंडारण जैसे कार्यों में उनका योगदान कृषि उत्पादन की निरंतरता बनाए



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

रखने में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त पशुपालन और डेयरी गतिविधियाँ, जो हरियाणा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, मुख्यतः महिलाओं द्वारा ही संचालित की जाती हैं। उदाहरण के तौर पर करनाल और रोहतक क्षेत्रों में कई महिला किसान दुग्ध उत्पादन, चारा प्रबंधन और पशु देखभाल के माध्यम से परिवार की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

वर्तमान समय में महिलाएँ पारंपरिक कृषि तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जैविक खेती, सब्जी उत्पादन और बागवानी जैसी आधुनिक गतिविधियों को भी अपनाने लगी हैं। सिरसा और फतेहाबाद जिलों में कुछ महिला समूह प्राकृतिक खेती और देशी बीज संरक्षण पर कार्य कर रहे हैं, जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ बाजार में उनकी अलग पहचान भी बन रही है। इसी प्रकार जींद और हिसार क्षेत्रों में महिलाओं ने स्वयं सहायता समूहों (मसभिम्सच ळतवनचे) के माध्यम से मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन और घरेलू प्रसंस्करण इकाइयाँ शुरू की हैं, जिससे उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई है।

महिला किसानों की भूमिका सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। जब महिलाएँ कृषि निर्णय-निर्माण, बाजार से जुड़ाव और डिजिटल तकनीकों को अपनाने लगती हैं, तो परिवार और समाज में उनकी स्थिति मजबूत होती है। उदाहरण के रूप में कई ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ मोबाइल ऐप और ऑनलाइन प्रशिक्षण के जरिए नई कृषि तकनीकें सीखकर उत्पादन क्षमता बढ़ा रही हैं। इस प्रकार हरियाणा में महिला किसान न केवल कृषि उत्पादन की आधारशिला हैं, बल्कि ग्रामीण उद्यमिता, सामाजिक सशक्तिकरण और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

लैंगिक समानता और विकसित भारत 2047

विकसित भारत 2047 की परिकल्पना केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और समावेशी विकास को सुनिश्चित करना भी है। भारत की कृषि व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी लंबे समय से महत्वपूर्ण रही है, लेकिन निर्णय-निर्माण, संसाधनों तक पहुँच और आर्थिक अधिकारों के संदर्भ में उन्हें समान अवसर हमेशा नहीं मिल पाए। इसलिए विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि महिला किसानों को कृषि क्षेत्र में समान अधिकार, तकनीकी ज्ञान और आर्थिक समर्थन प्रदान किया जाए।

लैंगिक समानता का अर्थ केवल महिलाओं की संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि उन्हें कृषि नीति, उत्पादन योजना, बाजार से जुड़ाव और संसाधनों के उपयोग में सक्रिय भागीदारी देना है। जब महिला किसान तकनीकी प्रशिक्षण, डिजिटल प्लेटफॉर्म और आधुनिक कृषि उपकरणों तक पहुँच प्राप्त करती हैं, तो उनकी कार्यक्षमता और आत्मनिर्भरता दोनों में वृद्धि होती है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

उदाहरण के रूप में डिजिटल कृषि एप्स, ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम और सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिलाएँ नई खेती तकनीकों, मौसम जानकारी और बाजार मूल्य से जुड़ रही हैं, जिससे उत्पादन की गुणवत्ता और आय में सुधार हो रहा है।

इसके अतिरिक्त, वित्तीय सहायता और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को उद्यमिता के अवसर मिल रहे हैं। जब महिलाएँ कृषि निर्णय-निर्माण में शामिल होती हैं, तो वे संसाधनों का अधिक संतुलित और टिकाऊ उपयोग करती हैं, जैसे जल संरक्षण, जैविक खेती और विविध फसल प्रणाली को अपनाना। इससे न केवल कृषि उत्पादन बढ़ता है बल्कि पर्यावरणीय संतुलन भी बना रहता है।

समग्र रूप से देखा जाए तो लैंगिक समानता विकसित भारत 2047 की आधारशिला है, क्योंकि महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होती है, सामाजिक असमानताएँ कम होती हैं और सतत विकास के लक्ष्य को गति मिलती है। इस प्रकार महिला किसानों का सशक्तिकरण आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन का भी महत्वपूर्ण माध्यम बनता है।

प्रमुख चुनौतियाँ

हरियाणा में महिला किसानों की भूमिका महत्वपूर्ण होने के बावजूद उन्हें कई सामाजिक, आर्थिक और संरचनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उनकी प्रगति और लैंगिक समानता को प्रभावित करती हैं।

1. भूमि स्वामित्व और संसाधनों तक सीमित पहुँच

ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर भूमि पुरुषों के नाम पर होती है, जिससे महिला किसानों को कानूनी अधिकार, बैंक ऋण और सरकारी योजनाओं का लाभ सीमित रूप से मिल पाता है। भूमि स्वामित्व की कमी के कारण महिलाएँ कृषि निर्णयों में भी कम भागीदारी कर पाती हैं और आधुनिक संसाधनों जैसे उन्नत बीज, मशीनरी और सिंचाई सुविधाओं तक उनकी पहुँच कम रहती है।

2. शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण की कमी

कई महिला किसान औपचारिक शिक्षा और आधुनिक कृषि तकनीकों से वंचित रहती हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म, नई कृषि मशीनों और वैज्ञानिक खेती के तरीकों की जानकारी सीमित होने से उनकी उत्पादकता और आय बढ़ाने की क्षमता प्रभावित होती है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमी या उन तक पहुँच न होना भी एक बड़ी बाधा है।

3. सामाजिक रूढ़ियाँ और लैंगिक भेदभाव

पारंपरिक सामाजिक सोच में महिलाओं को अक्सर सहायक श्रमिक के रूप में देखा जाता है, जिससे उनके कार्य का उचित मूल्यांकन नहीं हो पाता। कई बार निर्णय-निर्माण, बाजार से



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

जुड़ाव और नेतृत्व भूमिकाओं में महिलाओं की भागीदारी सामाजिक मान्यताओं के कारण सीमित रह जाती है। यह स्थिति उनके आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति दोनों को प्रभावित करती है।

4. बाजार और वित्तीय सेवाओं तक सीमित अवसर

महिला किसानों को सीधे बाजार तक पहुँच, उचित मूल्य और वित्तीय सेवाओं जैसे ऋण, बीमा और बचत योजनाओं का लाभ लेने में कठिनाइयाँ आती हैं। जानकारी की कमी और संस्थागत सहयोग के अभाव में वे बिचौलियों पर निर्भर हो जाती हैं, जिससे उनकी आय सीमित रह जाती है। इस प्रकार ये चुनौतियाँ न केवल महिला किसानों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करती हैं, बल्कि लैंगिक समानता और विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को हासिल करने में भी प्रमुख बाधा बनती हैं।

सुझाव और समाधान

कृषि आधारित हरियाणा में महिला किसानों की स्थिति को मजबूत बनाने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए कुछ प्रभावी नीतिगत एवं व्यावहारिक सुझाव आवश्यक हैं। ये समाधान न केवल महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुधार सकते हैं, बल्कि विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में भी सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

1. महिला किसानों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम और डिजिटल शिक्षा

महिला किसानों को आधुनिक कृषि तकनीक, जैविक खेती, जल प्रबंधन, फसल विविधीकरण और डिजिटल प्लेटफॉर्म के उपयोग से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। ग्रामीण स्तर पर कृषि विस्तार सेवाओं और ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉड्यूल के माध्यम से महिलाएँ मौसम पूर्वानुमान, बाजार मूल्य और नई तकनीकों की जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। इससे उनकी उत्पादकता और आत्मनिर्भरता दोनों में वृद्धि होगी।

2. स्वयं सहायता समूहों और सहकारी समितियों को बढ़ावा देना

स्वयं सहायता समूह (समूह) महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम हैं। इन समूहों के जरिए महिलाएँ सामूहिक बचत, ऋण सुविधा और छोटे उद्यम शुरू कर सकती हैं। सहकारी समितियों के माध्यम से कृषि उत्पादों की सामूहिक बिक्री करने से उन्हें बेहतर बाजार मूल्य मिल सकता है और बिचौलियों पर निर्भरता कम हो सकती है।

3. कृषि योजनाओं में महिलाओं की प्राथमिक भागीदारी सुनिश्चित करना

सरकारी कृषि योजनाओं, सब्सिडी और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। महिला किसान पहचान पत्र, महिला-विशेष कृषि योजनाएँ और पंचायत स्तर पर उनकी भागीदारी बढ़ाने से निर्णय-निर्माण में उनकी भूमिका मजबूत होगी। इससे लैंगिक समानता को व्यावहारिक रूप से लागू किया जा सकेगा।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

4. भूमि अधिकार और वित्तीय सहायता को आसान बनाना

महिलाओं के नाम पर भूमि पंजीकरण को प्रोत्साहित करना और बैंक ऋण, बीमा तथा वित्तीय योजनाओं तक उनकी पहुँच आसान बनाना आवश्यक है। यदि महिला किसानों को सीधे वित्तीय सहायता मिलेगी, तो वे नई तकनीकों और कृषि नवाचारों को अपनाने में अधिक सक्षम होंगी। इस प्रकार ये सुझाव महिला किसानों के सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी सशक्तिकरण को बढ़ावा देकर हरियाणा में समावेशी एवं सतत कृषि विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

निष्कर्ष

हरियाणा के कृषि क्षेत्र में महिला किसानों का योगदान केवल श्रम तक सीमित नहीं है, बल्कि वे ग्रामीण अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना और सतत विकास की प्रमुख आधारशिला के रूप में उभर रही हैं। खेती-बाड़ी, पशुपालन, डेयरी, जैविक उत्पादन और ग्रामीण उद्यमिता जैसी गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी ने कृषि उत्पादन को मजबूत बनाने के साथ-साथ परिवार की आर्थिक स्थिरता को भी बढ़ाया है। इसके बावजूद भूमि स्वामित्व, संसाधनों तक पहुँच, तकनीकी प्रशिक्षण और सामाजिक मान्यता जैसी चुनौतियाँ अभी भी उनके समग्र विकास में बाधा बनती हैं।

विकसित भारत 2047 की परिकल्पना तभी सार्थक हो सकती है जब कृषि क्षेत्र में महिलाओं को समान अवसर, निर्णय-निर्माण में भागीदारी और आधुनिक संसाधनों तक उचित पहुँच प्रदान की जाए। लैंगिक समानता को बढ़ावा देने से महिलाओं की क्षमता और नवाचार को नई दिशा मिलती है, जिससे कृषि उत्पादन की गुणवत्ता और स्थिरता दोनों में सुधार संभव होता है। जब महिला किसान डिजिटल तकनीकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और वित्तीय सहायता से जुड़ती हैं, तो वे न केवल अपनी आय बढ़ाती हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ कृषि पद्धतियों को भी अपनाती हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो महिला किसानों का सशक्तिकरण आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करता है। लैंगिक समानता पर आधारित कृषि व्यवस्था ग्रामीण समाज में संतुलित, समावेशी और न्यायपूर्ण विकास सुनिश्चित कर सकती है। इसलिए आवश्यक है कि नीतिगत स्तर पर महिलाओं की भागीदारी को प्राथमिकता दी जाए, ताकि हरियाणा ही नहीं बल्कि पूरे देश में विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को स्थायी और समावेशी रूप से प्राप्त किया जा सके।

संदर्भ सूची

1 अग्रवाल, बी. (2010). जेंडर एंड ग्रीन गवर्नेंस द पॉलिटिकल इकोनॉमी ऑफ वूमेन्स प्रेजेन्स विदिन एंड बिरॉन्ड कम्युनिटी फॉरेस्ट्री. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

- 2 देसाई, एन., – पटेल, वी. (2016). ग्रामीण भारत में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रूरल स्टडीज, 23(2), 45-52।
- 3 खाद्य एवं कृषि संगठन (2011). स्टेट ऑफ फूड एंड एग्रीकल्चररू कृषि में महिलाएँ दृ विकास हेतु लैंगिक अंतर को कम करना।
- 4 भारत सरकार. (2020) कृषि जनगणना 2015–16. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली।
- 5 हरियाणा सरकार. (2022). हरियाणा सांख्यिकीय सार. आर्थिक एवं सांख्यिकी विश्लेषण विभाग, चंडीगढ़।
- 6 कौर, आर., – सिंह, जे. (2021). उत्तर भारत में कृषि विकास में महिला किसानों की भूमिका। जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट, 40(3), 327–341।
- 7 शर्मा, पी. (2019). कृषि में लैंगिक भागीदारी हरियाणा राज्य का एक अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स, 74(1), 112–120।
- 8 सिंह, एस. (2018). भारत में महिलाएँ, कृषि और ग्रामीण आजीविका. नई दिल्ली सेज पब्लिकेशन्स।
- 9 संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) (2021). जेंडर इक्वैलिटी स्ट्रेटेजी रिपोर्ट. न्यूयॉक
- 10 नीति आयोग. (2023). विकसित भारत / 2047रू विजन डॉक्यूमेंट. भारत सरकार।
11. गोडारा, गर्गी, प्रोमिला चाहल एवं मोनिका मिथारवाल (2025). "कृषि में महिलाओं की भागीदारी की सीमा एवं उसे प्रभावित करने वाले कारक हरियाणा, भारत के संदर्भ में।"
12. रानी, अंजू (2021). "कृषि गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी हरियाणा, भारत का एक अध्ययन।
13. रुचि, विनोद कुमारी, सुभाष चंद्र एवं प्रीति (2022). "हरियाणा में कृषि गतिविधियों के निर्णय–निर्माण में कार्यरत एवं गैर–कार्यरत महिलाओं की भूमिका।" 17(3), 871-877.
14. मित्तल, सुरभि एवं विनोद के. हरिहरन (2021). "गेहूँ उत्पादन एवं कृषि निर्णय–निर्माण में लैंगिक भूमिका।" 34(1), 111-120.
15. दत्त, बालेश्वर एवं देशराज साभरवाल (2025). "हरियाणा के समकालीन किसान आंदोलन में महिलाओं की भूमिका रू एक आलोचनात्मक अध्ययन।" 23(3), 89-92.
16. देवी, सुषमा, सुधा दुबे एवं मिथिलेश कुमार दुबे (2026). "कुरुक्षेत्र, हरियाणा में कृषि आजीविका में महिलाओं का योगदान।"
17. हिमांशी एवं संतोष रानी (2026). "हरियाणा में ग्रामीण महिलाओं की डेयरी कृषि की सामाजिक–आर्थिक विशेषताएँ एवं चुनौतियाँ।" 26(3), 183-192.



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

18. हिमांशी, संतोष रानी एवं माखन माजोका (2026). "हिसार जिले में ग्रामीण महिलाओं की डेयरी कृषि में गतिशील भागीदारी दो विकासखंडों का तुलनात्मक अध्ययन।" 32(3), 71दृ82.
19. रानी, निशा (2026). "हरियाणा में कृषि एवं घरेलू निर्णयों को प्रभावित करने में महिलाओं की भूमिका।" 6(4), 1दृ9.
20. प्रियंका एवं प्रदीप कुमार शर्मा. "सोनीपत जिले में कृषि क्षेत्र में लैंगिक असमानताएँ रु एक स्थानिक-आर्थिक अध्ययन।"
21. हरियाणा सरकार, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग. हरियाणा राज्य सांख्यिकी सारांश। चंडीगढ़।
22. हरियाणा सरकार, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग. हरियाणा आर्थिक सर्वेक्षण। चंडीगढ़।
23. हरियाणा सरकार. हरियाणा की कृषि एवं कृषक संबंधी सांख्यिकीय रिपोर्टें। चंडीगढ़।
24. भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय. कृषि जनगणना एवं कृषि सांख्यिकी। नई दिल्ली।
25. भारत सरकार, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय. भारत में महिला एवं पुरुष नई दिल्ली।
26. भारत सरकार, ग्रामीण विकास मंत्रालय. महिला किसान सशक्तीकरण संबंधी कार्यक्रम एवं रिपोर्टें। नई दिल्ली।
27. नीति आयोग. विकसित भारत /2047 दृष्टि एवं रणनीतिक परिप्रेक्ष्य। भारत सरकार, नई दिल्ली।
28. खाद्य एवं कृषि संगठन (७।८). कृषि एवं ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका। रोम।
29. अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन। ग्रामीण महिलाओं का रोजगार एवं श्रम सहभागिता। जिनेवा।
30. विश्व बैंक. कृषि, लैंगिक समानता एवं महिला सशक्तीकरण संबंधी अध्ययन। वाशिंगटन डी.सी.